डा. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

आधुनिक काल (प्रयोगवाद)

प्रश्न: प्रयोगवाद की परिभाषा देते हुए उसकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: सात रूपाकारों पर प्रयोग करने वाली कविताओं को प्रयोगवाद का नाम देने का श्रेय प्रगतिवादियों को जाता है। प्रयोगवाद की शुरुआत कब हुयी इस संबंध में मतभेद है। प्रपद्यवाद के एक प्रवक्ता केसरी कुमार के अनुसार, "हिन्दी कविता में प्रयोगवाद का वास्तविक आरंभ सन 1936-38 ई० से माना जा सकता है इसकी शुरुआत गजानन विलोचन शर्मा की कविता से होता है। प्रगति का प्रयोग शब्द के प्रति मोह न हो और एक नए काव्य के संपूर्ण दायित्व को स्वीकार किया जाये इसलिए उन कवियों ने अपने (वाद) के लिए 'प्रपद्यवाद' और नाम संकेत के लिए (नकेन) का अभिधेय स्वीकारा। इस प्रकार हिन्दी कविता की धारा निःसंकोच होकर 'प्रयोग' को ही अपना साध्य मानती है।

जिन्होंने प्रयोग को कविता में साध्य माना वह प्रयोगवादी कहलाए और जिसने साध्य घोषित किया वह संभवतः अपने को कथित प्रयोगवादियों से अलग करने के लिए प्रपद्यवादी अथवा (नकेन) कहा। अज्ञेय अपने को प्रयोगवादी मानने से इंकार करते रहे - "प्रयोग कोई 'वाद' नहीं है। हम वादी नहीं हैं न प्रयोग अपने आप में इष्ट या साध्य है। अतः हमें प्रयोगवादी कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना हमें कवितावादी।" विश्वम्भर मानव ने कहा - "कि स काव्य में भाव और कला संबंधी प्रयोग सचेष्ट भाव से किया जाये उसे प्रयोगवाद काव्य कहते हैं। डा० रामविलास शर्मा प्रयोगवाद की शुरुआत सन् 1947 ई० से मानते हैं। सन 1947 में अज्ञेय जी द्वारा (प्रतीक) पत्रिका निकाला गया जिसमें घोषणा की गयी - "जीवन के गहनतर स्तरों को उज्ज्वल तर आलोक से विशदतर रूप में परिभाषित करने वाले साहित्य के खोजी हैं।"

वास्तविकता यह है कि हिन्दी कविता के पाठकों में प्रयोगवाद की चर्चा (तार सप्तक) काव्य संग्रह 1943 ई० से शुरू हुयी। (प्रतीक) पत्रिका से इसे बल मिला। और दूसरा (तार सप्तक) निकलते ही अंतिम रूप से इसकी प्रस्थापना हो गयी। इसका मतलब उस समय इस संग्रह में जितनी कविताएँ छपी सभी को प्रयोगवाद की संज्ञा दी गयी है। इन सप्तकों में रामविलास शर्मा से लेकर मुक्तिबोध, भारतभूषण अग्रवाल एवं भवानी

प्रसाद मिश्र तक को स्थान मिला। इसलिए प्रयोगवाद संबंधी जो धारणा बनी वह प्रकाशनों के अपवादों के आधार पर नहीं बल्कि मुख्य स्वर के आधार पर बनी। पटना से प्रकाशित होने वाली 'पाटल' और 'पत्रों' ने प्रयोगवाद संबंधी धारणा को और पुष्ट ही किया।

इस प्रकार हिन्दी कविता में प्रयोगवाद के बारे में एक निश्चित धारणा बन गयी। मोटे रूप में इस धारणा का रूप इस प्रकार है —

(क) यह प्रगतिवाद या प्रगतिशील भावना से अलग है।
(ख) प्रयोगवाद ह्रासशील भावनाओं की कविता है।
(ग) इसमें कुछ कविताएँ प्रयोग के लिए लिखे गए हैं।
(घ) प्रयोगवाद की कुछ कविताएँ काव्य-शिल्प की दृष्टि से काफी अनगढ़पन और दीक्षागम्य है।
(ङ) प्रयोगवाद कविता के ही क्षेत्र में नहीं बल्कि साहित्य के अन्य रूपों में भी किसी न किसी नाम से मौजूद रहा है।

डा० गणेश खरे का मानना है — "प्रयोगवाद आसमान से उतर कर नहीं आया और न वह अचानक बिजली की कौंध ही है। वह काव्य में अनेक वर्षों से अवदमित प्रवृत्तियों के समयानुकूल विस्फोटन का प्रतिफलन है।" प्रयोगवादी कवियों ने अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण छायावादी काव्य की अप्सरामयी, श्रद्धामयी, गरिमामयी कल्पनावादी नारी को सामान्य भाव-भूमि पर प्रतिष्ठा की। इस कारण अस्पृश्य प्रेम ने साकार होकर माँसल रूप धारण कर लिया। भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता की स्थापना भी इसी दृष्टि का फल है। छायावाद में प्रेम अभिव्यक्ति का स्वरूप रहस्यात्मक है और प्रयोगवाद इस पर बौद्धिक आवरण है। इसमें रूढ़ियों का विरोध है और मान्यताओं पर प्रश्न चिह्न लगा हुआ है। अज्ञेय की पंक्तियाँ इस संबंध में द्रष्टव्य है —

"आह मेरा श्वास है उत्तप्त —
धमनियों में उमड़ आयी है लहू की धार
प्यार है अभिशप्त
तुम कहाँ हो नारि ?

'तार सप्तक' के कवि भारतभूषण के बारे में यथार्थवादी ढंग से लिख रहे थे। इस यथार्थवाद में कहीं विवाहित जीवन की रंगीनी थी तो कहीं अतृप्त प्रेम की कुंठा। गिरिजा कुमार माथुर के अनुसार — केसर रंग रंगे वन, पहले ही पहले चुम्बन की ललाई, रेशमी चूड़ी का टुकड़ा, रेशम सेज कोना और वनफूलों की खुशबू से मन बहला रहे थे।

प्रयोगवादी कवि छायावादी काव्य की उदात्तता की जगह वस्तुओं के क्षुद्र रूपों को उद्घाटित करता है।

उदाहरण के लिए - चाय की प्याली, मकड़ी का जाला, बाँस की टूटी हुयी फट्टी, रिरियाता कुत्ता आदि उपलब्ध है।

प्रयोगवाद ने बड़ी-बड़ी घटनाओं, बड़े-बड़े संघर्षों, बड़े-बड़े व्यक्तियों या समुदायों, बड़े-बड़े जीवन-प्रसंगों के विशाल फलक पर इतिवृत्तात्मक काव्य का निर्माण नहीं किया, उसमे व्यक्ति के अंतः संघर्षों, क्षणों की अनुभूतियों और सूक्ष्म से सूक्ष्म, छोटी से छोटी तीव्र प्रभावशाली कविताएँ लिखीं। लघु मानव की उसकी समस्त हीनता और महत्ता के संदर्भ में प्रस्तुत करके प्रयोगवादी कविता ने उसके प्रति सहानुभूति की दृष्टि से सोचने के लिए एक नया रास्ता खोला। मनुष्य अपनी समस्त दुर्बलताओं, हीनताओं, लघुताओं और महत्ताओं के बीच यथार्थ है। अतः यथार्थ मानव की दृष्टि के लिए उसके जटिल परिवेश को अंकित किया गया। किन्तु यह जान लेना आवश्यक है कि प्रयोगवादी कवि समूह के विरोध में व्यक्तिवादी मूल्य लेकर आये। कियोंकि मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास उसके समाज में ही संभव है। जो लोग समाज-विरोधी ही नहीं, व्यक्ति विरोधी भी हो जाते हैं। साहित्य में देश की अस्वीकृति से प्रारंभ करके वे अंत करते हैं कविता की अस्वीकृति से—

"मगर खबरदार,
मुझे कवि मत कहो
मैं बकता नहीं हूं कविताएँ
ईजाद करता हूँ गाली
फिर उसे बुदबुदाता हूँ।"

प्रयोगवाद की सबसे बड़ी विशेषता वैचित्र्य विधान की प्रवृत्ति और बिखरी वस्तुओं पर सुंदर, के मोहक चित्रों, झिलमिल छायाओं, रूपकों और कल्पित प्रतीकों का आरोप। समष्टि से निरपेक्ष वह व्यक्तिगत कुंठाओं से आक्रांत है और उसकी प्राणवत्ता ही स्वच्छंद विचारों के दबाव से जो कल्पना में छाया चित्र उभर आये हैं उनका अनूठा चित्रण है। प्रयोगवादी हर पंक्ति में प्रयोगगत, व्यंजनागत चमत्कार चाहता है, भले ही अनेक स्थलों पर वे बेमेल और अयोग्य सिद्ध क्यों न हों।

प्रयोगवादियों की भाषा अस्पष्ट, दुरूह तथा बोझिल है। उनमें नए-नए शब्द, नए-नए छंद बनाए, जहाँ शब्द असमर्थ लगे वहीं विराम चिह्नों से मदद ली गयी। लेकिन अपने को स्पष्ट करने के लिए जितनी कोशिश की, उतना ही अस्पष्ट होते गए।

P.T.O

कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रयोगवादी तय कर लेता है था कि सँवारने में जो बिगड़े उसे बनाना क्या, उस बिगड़े को चित्र को खींच-खाँचकर और भी बिगाड़ देता था ताकि वह खुद न समझ आए और कोई दूसरा भी समझ न सके।

प्रयोगवाद के पास अपना कोई जीवन-दर्शन है। उन्होंने विभिन्न पाश्चात्य दर्शनों से प्रेरणाएँ ग्रहण की। प्रयोगवाद एक ओर छायावाद तथा वैयक्तिक कविता को व्यक्तिवादी मनोवृत्ति का विस्तार, दूसरी छायावाद की कल्पनाशीलता एवं स्वप्नशीलता, आदर्शवादिता एवं भावुकता का विरोधी है। छायावाद का कवि जहाँ अनजाने में ही अपनी कुंठाओं का काम प्रतीकों सहज रूपों में व्यक्त करता था, वहीं प्रयोगवादी कवि के प्रतीक-विधान में अवचेतन-विज्ञान का सचेष्ट उपयोग रहता है। डा. नगेन्द्र ~~इसके असहमत~~ इस बात से असहमत हुआ जा सकता है कि छायावाद के रंगीन कल्पना वैभव और सूक्ष्म तरल भावना चिंतन के स्थान पर प्रयोगवाद में ठोस बौद्धिक तत्व का बोझिलपन है, परन्तु ये रचनाएँ प्राचीन दार्शनिक अथवा चिंतन विचार प्रधान कविताओं की परंपरा में नहीं आती।

P.G. Semester II
CC - 5
"Pryogvad ki Visheshta"